डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 07.09.2020

व्याख्यान संख्या-53 (कुल सं. 89)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

घन घेरो छुटिगो हरषि चली चहूँ दिसि राह।

कियो सुचैनो आय जग, सरद सूर नरनाह।।

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' से उद्धृत है। इसके रचयिता रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि बिहारी हैं, जिनकी रचना 'बिहारी सतसई' हिन्दी साहित्य में लोकप्रियता के क्षेत्र में रामचरितमानस के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

प्रस्तुत प्रसंग शरदऋतु-वर्णन के बहाने से प्रोषितपतिका नायिका को सखी द्वारा सांत्वना देने का है। प्रोषितपतिका नायिका की सखी उसको ढाढ़स बँधाने के लिए कहती है कि अब वर्षा बीत गयी है और शरद् का सुखद समय आ गया है। वर्षा के कारण जो रास्ते बंद हो रहे थे वे खुल गये और चारों ओर लोग आने-जाने लगे हैं। अतः अब तुम धैर्य धारण करो। तुम्हारे प्रियतम भी शीघ्र आ जाएँगे।

सखी के शब्दों में कवि कहते हैं कि बादल रूपी डाकुओं अथवा घातकों का घेरा (घेरघार) छूट गया, चारों ओर की राहें हर्षपूर्वक चलने लगीं अर्थात् पथिक रास्ते की बाधाओं से निडर होकर यात्रा करने लगे हैं। शरद् ऋतु रूपी वीर राजा ने आकर संसार को घनों की बाधा से रहित करके सुखप्रद कर दिया है।

प्रस्तुत दोहे के संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि 'घन' शब्द यहाँ श्लिष्ट है। इसका एक अर्थ बादल और दूसरा अर्थ मार डालने वाला अर्थात् डाकू इत्यादि है। इन्हीं दो अर्थों के आधार पर इसमें श्लिष्टपद मूलक रूपक है। वस्तुतः वर्षा ऋतु में बादलों की घेरघार के कारण और निर्बल राजा अथवा बिना राजा के देश में डाकुओं इत्यादि के फैलाव के कारण मार्ग बंद हो जाते हैं, परंतु शरद्

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

ऋतु में बादलों के हट जाने पर एवं देश में प्रबल राजा का अधिकार हो जाने पर डाकू इत्यादि के उपद्रव शांत हो जाने पर मार्ग खुल जाते हैं और सभी लोग सुख से चारों ओर आने-जाने लगते हैं। इन्ही दोनों भावों को कवि ने एक दोहे में पिरो कर इस रूप में रूपक बाँधा है।

प्रस्तुत दोहे में उपमेय को उपमान का रूप प्रदान किया गया है। एक वस्तु पर अन्य वस्तु का आरोप कर दोनों में अभेद-स्थापन होने अर्थात् एकरूपता की स्थापना होने के कारण रूपक अलंकार है। अभेद का अर्थ तादात्म्य-प्रतीति है अर्थात् एक वस्तु में दूसरी वस्तु इस प्रकार रखी जाए कि दोनों में किसी प्रकार का अंतर न रह जाए। इसी प्रकार का वर्णन होने के कारण यहाँ रूपक अलंकार है।